ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

प्राकृतिक आपदाएं और पशु प्रबंधन

डॉ. ममता, डॉ. अजय कुमार, डॉ. रजनीश सिरोही, डॉ. दीप नारायण सिंह, एवं डॉ. यजुवेन्द्र सिंह

पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग, पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय मथुरा

प्राकृतिक आपदाओं के कारण जहाँ एक ओर बड़े पैमाने पर जन-धन की हानि होती है वहीँ दूसरी ओर सामाजिक व आर्थिक व्यवस्थाएं भी ठप्प हो जाती है। इन परिस्थितयों से स्थानीय तौर पर उभरना कठिन हो जाता है। अपनी भौगोलिक और जलवायुकि परिस्थितियों के कारण भारत प्राकृतिक आपदाओं के लिए एक संवेदनशील भूखंड है। यदि आपदाओं के प्रति भारत की संवेदनशीलता पर दृष्टि डालें तो हम पाते हैं कि भारत का लगभग 68 % भूभाग सूखे के लिए और 12 % भूभाग बाढ़ के लिए 57% भूभाग भूकंप के लिए संवेदनशील है।

विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं में से किसी न किसी आपदा का सामना देश के किसी न किसी भाग को करना ही पड़ता है। जैसे कि

भूकम्प - भूकंप पृथ्वी की आन्तरिक चट्टानों में तनाव के कारण प्रकट होता है जिसका अनुमान लगाना आज भी सम्भव नहीं है।

भूस्खलन - जब चट्टानें प्राकृतिक या मानवीय कारणों से चटक जाती हैं तो गुरूत्व बल से धराशायी हो जाती हैं जिसे भूस्खलन कहते हैं। ऐसी घटना अधिकतर पहाड़ी क्षेत्रों में घटित होती हैं। भूकंप के झटके कुछ ही क्षणों में हजारों लोगों को काल-कवलित कर देते हैं। भूस्खलन के मलबे से गाँव और शहर उजड़ जाते हैं , सड़कें और बाँध टूट जाते हैं तथा विस्तृत क्षेत्र में पारिस्थितिक व्यवधान उत्पन्न हो जाते हैं।

सूखा - वर्षा न होने से सूखा की स्थिति प्रकट होती है जिससे वनस्पतियाँ सूख जाती है और प्राणियों के लिए पेयजल की कमी हो जाती है। यह स्थिति भीषण अकाल का कारण बन जाती है। भारत में प्रति वर्ष किसी न किसी क्षेत्र में सूखा या अनावृष्टि पड़ता रहता हैं।

बाढ़ - बाढ़ प्राकृतिक आपदाओं में सबसे अधिक विश्वव्यापी हैं जब वर्षा जल अपने प्रवाह मार्ग (नदी-नाला) से स्खलित न होकर आस-पास के क्षेत्रों पर फैल जाता है तो उसे बाढ़ कहा जाता है।
चक्रवात - चक्रवात अत्यंत निम्नवायुदाब का लगभग वृत्ताकार केंद्र हैं। जिसमें चक्कर दार पवन प्रचंड वेग से चलती हैं तथा मूसलाधार वर्षा करती हैं।

पशु अक्सर आपदा के मूक शिकार होते हैं साथ ही आमतौर पर भारत में राहत अक्सर प्रभावित क्षेत्रों में आपदा आने के 24-72 घंटों के बीच पहुंच पाती है। ऐसे में पशुओं की सुरक्षा और कल्याण को सुनिश्चित करने के लिए प्रबंधन कार्यक्रमों हेतु प्रभावी प्रशिक्षण का प्रावधान एक अनिवार्य आवश्यकता हो जाती है। इसके लिए व्यवस्थित दृष्टिकोण से आपदा प्रबंधन के अध्ययन की आवश्यकता होती है।जब पशु आपदा से प्रभावित होते हैं तो मुख्य रूप से निम्नलिखित समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है -

भोजन और पानी की आपूर्ति का खराब होना , जूनोसिस, पशुओं द्वारा काटे जाने की समस्या , पशुओं के साथ पशुपालक का भावनात्मक सम्बन्ध को ठेस पहुंचना , डेयरी और पशुधन उत्पादन में कमी। चारा और पानी की कमी के कारण उच्च पशुधन मृत्यु दर और घरेलू और जंगली पशुओं दोनों प्रजातियों को नुकसान , चारा और पानी की कमी , शारीरिक चोट और आपदा के दौरान और बाद में फैलने वाली बीमारियों के कारण।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

आपदा के दौरान पशुओं की सुरक्षा के लिए बुनियादी नियम-

- पशु चिकित्सक और पशु संरक्षण विशेषज्ञों को आपदा मूल्यांकन टीमों में शामिल किया जाना चाहिए और सामुदायिक आपदा योजना में उनकी सलाह का उपयोग किया जाना चाहिए।
- जहां संभव हो, मानवीय राहत निकायों और स्थानीय सरकार को पशु देखभाल समूहों को शामिल किया जाना चाहिए।
- मानवीय सहायता कर्मियों को आवारा पशुओं से सुरक्षा हेतु बुनियादी प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। पशु देखभाल और मानवीय राहत कार्यकर्ताओं के बीच संयुक्त प्रशिक्षण दोनों समुदायों की एक साथ काम करने की क्षमता को बढ़ाएगा और आपदा प्रबंधन के लिए एक दृष्टिकोण सुनिश्चित करेगा जो कम से कम लागत पर लोगों और पशुओं दोनों को बचाता है।
- यह आवशयक हो जाता है की नीति निर्माता व्यावहारिक स्वदेशी तकनीक और आर्थिक, व्यापार या सामाजिक प्रतिबंध को ध्यान में रखें।

आपदा के दौरान पशुधन की देखभाल

आपात स्थिति के दौरान पशुधन के साथ व्यवहार करते समय , अपनी प्राथमिकताओं को फिर से स्थापित करना महत्वपूर्ण होता है। पहली प्राथमिकता आपकी व्यक्तिगत सुरक्षा और कल्याण होनी चाहिए, इसके बाद अन्य लोगों की सुरक्षा और कल्याण और अंत में पशुओं और संपत्ति की सुरक्षा होनी चाहिए।यदि आप सुरक्षित हैं तभी आप पशुओं की सुरक्षा और कल्याण पर ध्यान दे सकता हैं। यदि आप खतरे में हैं तो उनका कल्याण और स्वास्थ्य पर विचार कारण सम्बव नहीं हो सकता।

- आपदा की स्थिति में पशु मर सकते हैं या चोरी हो सकते हैं। इस प्रकार पशुधन की हानि अर्थव्यवस्था के लिए एक बड़ा नुकसान और भविष्य के संघर्ष का कारण बन सकती है। अतः यह आवश्यक है की उचित प्रारंभिक चेतावनी के साथ , जानवरों को निकालने के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध होने चाहिए। पशुओं की निकासी के लिए विचार किए जाने वाले बिंदुः

1. सुरक्षित स्थान का पता लगाएं।
2. निकाले जाने वाले जानवरों का चयन।
3. पशुओं की पहचान रखें ।
4. प्राथमिक और द्वितीयक मार्गों का मानचित्रण साथ रखें ।
5. भोजन और पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करें।

- भूकम्प संभावित क्षेत्र में , पशुओं को हमेशा छप्पर के बाहर बांध कर रखना चाहिए। बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में , पशुओं को बाढ़ध्वक्रवात की चेतावनी के दौरान नहीं बांधना चाहिए।
- पशुधन और अन्य जानवरों की देखभाल में पहला तार्किक कदम उनकी स्थिति का पता लगाना है क्युकी आपदा के दौरान प्रायः सामान्य मार्ग अवरुद्ध हो जाते है ऐसे में वैकल्पिक मार्गों की जानकारी के लिए स्थानीय संपर्कों की सहायता लेनी चाहिए।
- आपदा क्षेत्र में प्रवेश करते समय सुरक्षा के लिए आधिकारिक निर्देशों का पालन अवश्य करें।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

- भूकंप और चक्रवात जैसी आपदा से प्रभावित क्षेत्र में जाते समय डाउन पावर लाइन , बाढ़ वाले क्षेत्र में अस्थिर सड़कें और राजमार्ग , गैस रिसाव, मलबा आदि के खतरे के प्रति सजग रहें।
- पशुओं को शांति से और जिन तरीकों से वे परिचित हों उनकी हैंडलिंग हेतु उन्ही तरीकों का उपयोग करें।
- जहाँ तक संभव हो तो पशुओं को परिचित समूह को एक दूसरे के साथ रखें। सुनिश्चित करे की उन्हें रखने का स्थान अतिरिक्त उत्तेजनाओं से रहित हो। संगीत और परिचित ध्वनि पशुओं को शांत करने में मदद कर सकती है।
- हो सके तो जानवर को साफ करें (उनकी आंखें, मुंह और नाक साफ करें)।
- यदि संभव हो तो पशु को आपदा के अवशेषों से दूर ले जाएं।
- घायल जानवरों के घाव का इलाज करें ताकि उनके आराम के स्तर में सुधार हो।
- पशुधन के लिए आपदा पेटी तैयार कर के रखे जिसमे निम्नलिखित चीजे शामिल हों -

1. कील, रस्सियाँ, लगाम,
2. कॉन्सेंट्रेट फीड, घास, पूरक और दवाएं,
3. स्वामित्व के कागजात की प्रतियां,
4. बाल्टी या चारा जाल,
5. टॉर्च या लालटेन,
6. कंबल या जाल,
7. पोर्टेबल रेडियो और अतिरिक्त बैटरी,
8. प्राथमिक चिकित्सा आपूर्ति,

बड़े पैमाने पर बीमारी का प्रकोप गंभीर आपदाओं में से एक है , जिसमें बड़े पैमाने पर पशुओं को मारने और स्थानीय समुदायों और अर्थव्यवस्था को तबाह करने की क्षमता है। कुछ ऐसी बीमारियाँ हैं जो सूखे और बाढ़ की अवधि के दौरान अधिक होती हैं , जैसे की सबसे आम बीमारियां पैर और मुंह की बीमारी , रक्तस्रावी सेप्टीसीमिया , ब्लैक क्वार्टर , एंथ्रेक्स, एंटरोटॉक्सिमिया, कोलियोबैसिलस, सुर्रा, बेबेसियोसिस, थेलेरियोसिस, एनाप्लाज्मोसिस, पॉक्स रोग, ब्रुसेलोसिस, रिंगवर्म, टिक संक्रमण आदि। इसलिए इन बीमारियों पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है ताकि इसके प्रकोप को रोका जा सके।

यह जरूरी नहीं है कि प्रत्येक खतरा आपदा का रूप ले ले। फिर भी सावधानीपूर्वक योजना बना कर, अपनी क्षमता का विकास , पूर्व चेतावनी, सामुदायिक सहभागिता, आवश्यक उपकरणों और संसाधनों की उपलब्धता , नागरिकों की भागीदारी , को सम्मिलित करना इत्यादि बातों पर ध्यान दिया जाए तो इस तरह की घटनाओं में होने वाली हानि को कम किया जा सकता है।